मुनि रामसिंह

जीवन-परिचय : मुनि रामसिंह ने अपना कोई परिचय नहीं दिया और न ही अपने गुरु का कोई उल्लेख किया है। ग्रन्थ में रचनाकाल का उल्लेख भी नहीं है। परन्तु फिर भी ये बहुत विख्यात लेखक हैं।

मुनि रामसिंह का समय 10वीं शताब्दी हैं।

रचना-परिचय : मुनि रामसिंह की एकमात्र कृति दोहापाहुड है।

1. दोहापाहुड : इसमें 222 दोहे हैं। दोहे भावपूर्ण और सरस हैं। पूरे ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय अध्यात्म-चिन्तन है। आत्मानुभूति और सदाचरण के बिना कर्मकाण्ड व्यर्थ है। सच्चा सुख इन्द्रियनिग्रह और आत्मध्यान करने में है। मोक्षमार्ग के लिए विषयों का परित्याग करना आवश्यक है। ग्रन्थ में अध्यात्म के साथ रहस्यवाद भी दिखाई देता है। हिन्दी-साहित्य के पूरे सन्त-काव्य पर इस ग्रन्थ का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।